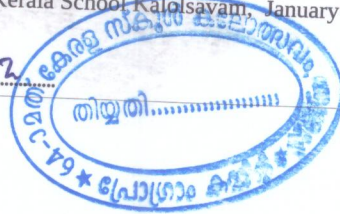


मैं कौन हूँ ?
दुई भरी आँखों की धाँसे ! ..

नज़ वारिश हो रही थी।
वारिश की बूँदें पेड़ों की पत्तियों से गिरने पर रिम-रिम
की आवाज़ें सुनाई दे रही थी। वारिश के वजह से
हिक से शस्ते भी नज़र नहीं आ रहे थे। सुबह
का वक़्त था। दिल्ली से सुबह ही मौसम बदल था।
लेकिन अब भी जगह-जगह से कहीना-कही वच्चों
की हँसी-खुशी की आवाज़ें कानों से गूँज रही थी।

"शम शमी" जो एक क्लिप्त
साल का नौजवान था। अपने विस्तर से उठा और
जल्दी काम के लिए तैयार होने लगा। उसके बाल काफ़ी
कम थे... वह लगभग गँजा था। उसकी आँखों से
एक अजीब-सी चमक नज़र आ रही थी!..
और उसकी आँखों के नीचे काले धब्बे बन
चुके थे। शायद ज्यादा काम पर ध्यान देने
की वजह से हो। उसका जोश चेहरा
काफ़ी थका हुआ नज़र आ रहा था।



समय साढ़े नौ बजने वाले थे।
राम बिना समय बर्बाद किए अपनी गाड़ी लेकर
दफ्तर की ओर जाने लगा। उसका मन शांत
था किसी चीज को सोच कर!... लेकिन क्या?
राम जल्दी दफ्तर पहुँच गया। बिल्कुल उसी
वक़्त जब वह दफ्तर पर पहुँचा वारिश भी
रुक गई। एक अजीब इंतज़ाक की तरह।

उसका मन काफी हिचकिचा रहा
था ऑफ़िस के अंदर जाने के लिए। तभी उसका
जिगरी दोस्त "मोहन" आता है। बिल्कुल उसी
वक़्त का!... लेकिन काफी तंदुरुस्त। काफी लंबा
आदमी... जिसने काफी मेहंगा सूट बगैर पहनकर
आया था। "चलो राम!... ऑफ़िस के अंदर
नहीं जाना क्या!?", मोहन राम के कंधों पर
हाथ रख कर बोला।

"तुम जाओ मैं बस अभी
आता हूँ।" इतना कहकर राम ने मोहन को
अंदर बेंच दिया। तब भी ऑफ़िस के शुरू
होने में दस-पंद्रह मिनट बाकि थे।



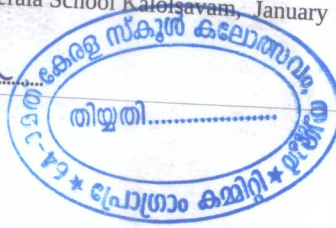
शम दफ्तर के पास जाने लगीचे
के पास थोड़ी देर खड़ा हो गया। कुछ सोचते हुए
तभी कोई आदमी उसके पास आया!.. और
बोला।

"अरे भैया थोड़ा पैसे दे सकते
हो मैं बहुत भूखा हूँ!..". वह एक बिखारी
था... लेकिन काफी भूखा। शम को यह अचानक
मुलाकात विल्कुल भी पसंद नहीं आई और वह
गुर्रसा हो गया।

"तुम कौन होते हो!.. तुम्हारी हिम्मत
कैसे हुई यहाँ हमारे दफ्तर से आकर लीख
माँगने की!..". शम ने गुस्से से कहा,

"मुझसे तुम कौन होते हो पूछने
से पहले!.. आप अपने आपसे पहले पूछलिये
"मैं कौन हूँ".... किसी की पहचान उसके
नाम था रूप से नहीं बल्कि उसके कर्मी
से है जो उसने किया है।" वह बिखारी इन कठोर
वातों को शम के लिए कह कर चला गया।

शम को यह बातों से कुछ



अजीब महसूस हुआ। उसके कानों से यह बातें
गूँजने लगीं और वह अतीत की यादों में
खो गया।

अतीत की यादों में -

शाम हर दिन की तरह ही
अपने कंपनी में काम कर रहा था। दफ्तर
में बैठे हुए उसको उसके बाँस ने बुलाया!..
किसी महम मीटिंग के कारण। दोपहर का
समय था। सूरज की किरणें दफ्तर के काँच
से होती हुई उस पर पड़ी। उसकी आँखें
चमक रही थीं!.. उसीके साथ गर्मी के कारण
उसका पसीना-पसीना हो रहा था।

उसके पसीने की बूँद एक-एक
कर के नीचे गिर रही थी जब वह मीटिंग के
दौशन कुछ प्रदर्शन कर के कह रहा था।
उसका पसीना सूरज की किरणों से चमक रहा
था। उसके कहने के बाद वह आराम से अपने
कुर्सी पर बैठ गया।

तभी उसको.. उसकी पत्नी
की कॉल आती है लगातार पाँच-छह बार और



കുछ देर बाद भी। लेकिन वह किसी भी कॉल को नहीं उठाता। वस गुस्सा हो जाता है। "शायद बेकार में कॉल कर रही है", शम सोचा।

लेकिन सीटिंग के बाद वह कॉल करता है तब बहुत देर हो चुकी थी। उसकी पत्नी को किसी खतरनाक विसारी ने कब्जा कर ~~लिखा~~ लिया है। शम ने किसी को अपनी पत्नी को कॉल करने पर शुना। वह नेजी से अपनी गाड़ी लेकर अस्पताल के ~~में~~ जाने लगा।

वहाँ दिल्ली में काफी ज्यादा भीड़ थी। लोग शाम के उस वक्त भी भीड़ जमा रहे थे। कई साइ बच्चों की खेलने और हँसी-खुशी की आवाजें शम के कानों में गूँज रही थी।

लेकिन शम अपने मंजील पर ही ध्यान दे रहा था - "अपनी पत्नी के पास पहुँचना!..", सूरज डूब रहा था। सूरज की आखिरी किरणें गाड़ी के शीशे से होती हुई

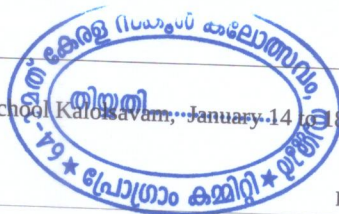


അക്കേ ചേരെ പര പड़ी. അക്കാ ചേരെ ചമക
 रहा था. चेहरा साफ नजर नहीं आ रहा
 था मगर कहीं से तो एक पानी की बूँद
 उसकी हथेली के मुट्ठी पर गिर पड़ी।

शायद थुद आसमान ही
 सूरज के जाने से रहा हो? , शाम ने
 उस पानी की बूँद को अपने गालों से
 पोछ लिया। वह मुस्कुराने की कोशिश कर
 रहा था लेकिन उस मुस्कुराहट के पीछे
 से ही दर्द बसी थी।

शाम दीर्घाते हुए अस्पताल के
 अंदर गया। कोई नर्स.. अस्को देखकर आशम
 से चलने के लिए कह रही थी मगर अस्का
 मन अपनी पत्नी के बारे से ही सोचकर
 दुःख के सागर में डूब रहा था।

शाम अपने पत्नी के
 पास पहुँचा.. बहुत देर के बाद। पत्नी के
 हाथ ठंडे हो चुके थे। उसकी साँस को शाम
 शमी ने ध्यान दिया। लेकिन वह बस वहम थी।
 वह अब नहीं रही...!



शम वहीं गिरकर सोने लगा।
उसके दिल से दशरे पड़ चुकी थी। आँखों से
लगातार आँसू की बूँदें गिर रही थी। उसका
साथ देने बस अब ऊपर अँधेरे भरे
आसमान से ठजाला देता चाँद ही थी।

“शम! अरे शम सुन रहे हो!!
मोहन की आवाज सुनकर शम अपने अतीत
की धाड़ों से बाहर आया।

अतीत से वापस-

“अरे चलो न ऑफिस के अंदर
चलते हैं। तुम कब तक यहीं खड़े रहोगे”,
मोहन जल्दी शम के उस पास आकर कहा।

शम मोहन की ओर मुड़ा...
और कहा - “मोहन! मैं कौन हूँ”,
उसकी आँखों से अब भी अपने कर्म के
आँसू की बूँदें एक-एक करके गिर रही
थी।

“अरे शम क्या हुआ तुम

വ्यों से रहे हो!" मोहन ने उसकी ओर
देखकर पूछा।

"अपनी पहचान और कर्म के
बारे से जानकर!", शम ने दिल से पत्थर रख कर
कहा।

सबक : जिंदगी से हम कभी-कभी नाम था
रूप की मदद से किसी को नहीं पहचान
पाते मगर किछ गद्द कर्म से हम किसी
को भी पहचान सकते हैं।